इस्लामी बहनों के आठ मदनी काम मदनी कामों के अहदाफ़, मदनी कामों का त़रीक़े कार, मदनी कामों की अहम्मिय्यत व फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल रंग बि रंगे मदनी फूलों से माला माल मदनी गुलदस्ता

इस्लामी बहनों के आठ मदनी काम

ISLAMI BAHNO KE 8 MADANI KAAM (HINDI)

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह रिसाला मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़्हा और सत्र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबिता न फ़रमाएं !!!

...राबिता :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئُ	ु = وُ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

इस्लामी बहनों के आठ[8] मदनी काम

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : مَنْ صَلّٰى عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاحِدَةً जो शख़्स दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइ़ज़्ने परवर दगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ेगा : صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ مَلٰٓئِكَتُهٗ سَبْعِيْنَ صَلَاةً उस पर **अल्लाह** तआ़ला और उस के फ़िरिश्ते 70 मरतबा रह़मत भेजेंगे ।[1]

रह़मत न किस त़रह़ हो गुनाहगार की त़रफ़ रह़मान ख़ुद है मेरे त़रफ़दार की त़रफ़[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकी की दा'वत का मदनी सफ़र

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाह** पाक ने इस दीन की ह़िफ़ाज़त के लिये हर दौर में ऐसे अफ़राद पैदा किये, जिन्हों ने न सिर्फ़ इस दीने मतीन (मज़बूत़ दीन) पर ख़ुद अ़मल किया, बल्कि दूसरों तक इस की ता'लीमात पहुंचाने और नेकी की दा'वत आ़म करने की भी भरपूर कोशिश फ़रमाई है मगर याद रखिये ! **अल्लाह** पाक हर चीज़ पर क़ादिर है, वोह हरगिज़ हरगिज़ किसी का मोह़ताज नहीं, उस ने अपनी क़ुदरते कामिला से इस दुन्या

[1] .....مسند احمد، مسند عبد اللہ بن عمرو بن العاص، ۳/۵۹۹، حدیث: ۶۹۲۵

[2] ....ज़ौक़े ना'त, स. 111

को बनाया, इसे त़रह़ त़रह़ से सजा कर इस में इन्सानों को बसाया, फिर इन की हिदायत के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन रुसुल व अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को मबऊ़स फ़रमाया (या'नी भेजा)। वोह अगर चाहे तो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के बिग़ैर भी बिगड़े हुए इन्सानों की इस्लाह़ कर सकता है, लेकिन उस की मरज़ी कुछ इस त़रह़ है कि उस के बन्दे नेकी की दा'वत दें और उस की राह में मशक़्क़तें झेल कर बारगाहे आ़ली से बुलन्द दरजात पाएं। चुनान्चे, **अल्लाह** पाक अपने रसूलों और नबियों عَلَيْهِمُ السَّلَام को नेकी की दा'वत के लिये दुन्या में भेजता रहा और आख़िर में अपने प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मबऊ़स किया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सिलसिलए नबुव्वत ख़त्म फ़रमाया। फिर येह अ़ज़ीमुश्शान मन्सब अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत के सुपुर्द किया कि ख़ुद ही आपस में एक दूसरे की इस्लाह़ करते रहें और नेकी की दा'वत के इस अहम फ़रीज़े को सर अन्जाम दें। चुनान्चे, मक्कए मुकर्रमा में मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े मह़शर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी इनफ़िरादी कोशिश से इस्लाम की दा'वत को आ़म किया और इस काम में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने भी जो इशाअ़ते इस्लाम में मुआ़वनत फ़रमाई वोह अपनी मिसाल आप है। मिसाल के त़ौर पर जब उस सर ज़मीन में नूरे इस्लाम की किरनें पहुंचीं कि अ़न क़रीब जिसे दारुल हिजरत, मदीनतुन्नबी और मदनी मर्कज़ बनने का शरफ़ ह़ासिल होने वाला था, तो वहां के रहने वालों ने बैअ़ते अ़क़बए ऊला के बा'द हादिये आ़लम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में अ़र्ज़ की : कोई ऐसा मुबल्लिग़ उन के हां भेजा जाए, जो न सिर्फ़ उन के अ़लाक़े (Area) में नेकी की दा'वत आ़म करे, बल्कि लोगों को क़ुरआने करीम की ता'लीमात (Teachings) से भी आरास्ता

करे चुनान्चे, अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को मुन्तख़ब (Select) फ़रमाया। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه नबुव्वत के ग्यारहवें साल ब मुत़ाबिक़ सिने 620 ईसवी को मदीनए मुनव्वरा पहुंचे और सिर्फ़ 12 माह के क़लील अ़र्से में आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इस बेहतरीन अन्दाज़ में नेकी की दा'वत आ़म की, कि मदीने शरीफ़ का कूचा कूचा और गली गली ज़िक्रे ख़ुदा व ज़िक्रे मुस्त़फ़ा के अन्वार से जग मगाने लगा। हर त़रफ़ दीने इस्लाम के चर्चे फैल गए। बच्चा हो या जवान, हर एक के दिल में इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ फ़रोज़ां (रौशन) हो गई। फिर ह़ज के मौसिम में आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه 70 अन्सार का एक मदनी क़ाफ़िला ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और यूं बैअ़ते अ़क़बए सानिया में अन्सारे मदीना के शुरकाए क़ाफ़िला को दीदारे मुस्त़फ़ा की दौलत पा कर सह़ाबी होने का शरफ़ मिला।[1]

मैं मुबल्लिग़ बनूं सुन्नतों का, ख़ूब चर्चा करूं सुन्नतों का
या ख़ुदा! दर्स दूं सुन्नतों का, हो करम! बहरे ख़ाके मदीना[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के ज़रीए जल्द इस्लाम की दा'वत मदीनए त़य्यिबा के घर घर में पहुंच गई, येह आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की उस ह़द दरजा इनफ़िरादी कोशिश का नतीजा था, जो आप ने रात दिन जारी रखी। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत

[1] .....طبقات کبریٰ، ۳۵-مصعب الخیر ابن عمیر، ذکر بعثۃ رسول اللہ ایاہ الی...الخ، ۳/۸۸

[2] ....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 189

को आ़म करने के लिये दिन रात की परवा किये बिग़ैर जब भी, जहां भी नेकी की दा'वत पेश करने के लिये जाना पड़ा कभी भी सुस्ती से काम न लिया।

सुन्नत है सफ़र दीन की तब्लीग़ की ख़ातिर
मिलता है हमें दर्स येह अस्फ़ारे नबी से (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इनफ़िरादी कोशिश का नतीजा

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ नेकी की दा'वत का येह सफ़र यूंही जारी व सारी है और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ता क़ियामत जारी रहेगा, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बा'द जब भी प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत बे अ़मली के दलदल में फंसी तो **अल्लाह** पाक ने अपने किसी नेक बन्दे के ज़रीए उस की नजात की राहें पैदा फ़रमाईं। चुनान्चे, पन्दरहवीं सदी हिजरी में भी ह़ालात कुछ ऐसे ही हुए तो इन नाज़ुक ह़ालात में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दा'वते इस्लामी के मदनी काम का आग़ाज़ किया। आप **अल्लाह** पाक व रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में डूब कर प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत की इस्लाह़ की ख़ातिर चलते रहे और फिर देखते ही देखते, आप के शबो रोज़ की कोशिशों, दुआ़ओं, ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा और इख़्लास व इस्तिक़ामत, हुस्ने अख़्लाक़ व शफ़्क़त, ग़म ख़्वारी व मिलनसारी की बरकत से मुसलमान मर्द व औ़रत बिल ख़ुसूस नौजवान जौक़ दर जौक़ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में शामिल

1 ....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 406

होने लगे। बे नमाज़ी नमाज़ी बने। चोर, डाकू, ज़ानी व क़ातिल, जुवारी व शराबी और दीगर जराइम पेशा अफ़राद ताइब हो कर मुआ़शरे के अच्छे अफ़राद बन कर **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त व फ़रमां बरदारी में लग गए, बे पर्दा रहने वालियों को ह़या की चादर नसीब हो गई, शरई पर्दा करने का मदनी ज़ेह्न बन गया। शरई पर्दों की मदनी बहारें आ गईं।

करें इस्लामी बहनें शरई पर्दा
अ़ता इन को ह़या शाहे उमम हो (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी का मदनी सफ़र

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मदनी सोच, उम्मत के दर्द में सुलगते दिल और नेकी की दा'वत में ह़रीस त़बीअ़त का नतीजा है। आप की तड़प है कि हर मुसलमान ह़क़ीक़ी त़ौर पर गुलामिये मुस्त़फ़ा का पट्टा अपने गले में डाल ले और सुन्नतों की चलती फिरती ऐसी तस्वीर नज़र आए कि इसे देख कर मदीने का वोह मन्ज़र याद आ जाए, जो मदीने के पहले मुबल्लिग़ या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की नेकी की दा'वत से मुतअस्सिर हो कर मदीने में सरकारे वाला तबार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद के मौक़अ़ पर नज़र आया था। या'नी जिस त़रह़ आमदे सरकार पर हर त़रफ़ ख़ुशियों का समां था, इमामे झन्डे बना कर लहराए जा रहे थे, हर त़रफ़ ज़बानों पर मह़ब्बत व अ़क़ीदत के

1....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 313

तराने थे, इसी त़रह़ घर घर में इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की ऐसी शम्अ़ रौशन हो जाए कि जिस की रौशनी में राहे आख़िरत का हर मुसाफ़िर अपनी मन्ज़िल पर रवां दवां रहे और कभी रास्ते से भटके न कभी रास्ते की मुश्किलात व मसाइब से थक हार कर बैठे। आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी का जब आग़ाज़ हुवा तो अव्वलन न कोई शो'बा था न कोई दर्सी किताब, कोई मुबल्लिग़ था न कोई मुअ़ल्लिम, मदनी मराकिज़ थे न मदारिसुल मदीना व जामिआ़तुल मदीना, बल्कि कोई काम करने का वाज़ेह़ त़रीक़एकार तक मौजूद न था और अगर यूं कहा जाए कि दा'वते इस्लामी ह़क़ीक़त में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते वाह़िद का नाम था तो बेजा न होगा।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! येह अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं, अन्थक कोशिशों, बेहतरीन ह़िक्मते अ़मली और मज़बूत़ दस्तूरुल अ़मल का नतीजा है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह मदनी तह़रीक, मुख़्तसर से अ़र्से में एक मुनज़्ज़म तन्ज़ीम की शक्ल इख़्तियार कर चुकी है, जिस की ज़ैली मुशावरतों ता आ़लमी मजलिसे मुशावरत और मर्कज़ी मजलिसे शूरा हज़ारों ज़िम्मेदारान और दुन्या भर में लाखों लाख मुन्सलिक इस्लामी भाइयों का ठाठें मारता समुन्दर नज़र आता है, लाखों लाख इस्लामी बहनें भी पर्दे में रह कर मदनी कामों में मसरूफ़े अ़मल हैं।

तन्हा चला तू साथ तेरे हो गया जहां
मीठा तेरा कलाम है इल्यास क़ादिरी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सब से पहला मदनी काम

सब से पहला मदनी काम, जिस से शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले

सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दा'वते इस्लामी के मदनी काम का सिलसिला शुरूअ़ फ़रमाया, वोह हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ है, यहां से आप ने इजतिमाई और इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ नेकी की दा'वत का सिलसिला बढ़ाया, फिर मसाजिदे अह्ले सुन्नत में दर्स का सिलसिला शुरूअ़ हुवा तो अव्वलन हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मश्हूर तस्नीफ़ मुकाशफ़तुल कुलूब से दर्स दिया जाता रहा । फिर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने गोशए तन्हाई अपनाई और प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत को बेशुमार सुन्नतों का मजमूआ **फ़ैज़ाने सुन्नत** की सूरत में अ़त़ा फ़रमाया । फिर दा'वते इस्लामी का मदनी काम बढ़ने की बरकत से मुख़्तलिफ़ शहरों से उठने वाली आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक देखते ही देखते बाबुल इस्लाम (सिन्ध), पन्जाब, ख़ैबर पख़्तूनख़्वाह (KPK), कश्मीर, बलूचिस्तान, गिलगित बिल्तिस्तान और फिर हिन्द, बंगला देश, अ़रब अमारात, श्रीलंका, बरत़ानिया, ऑस्ट्रेलिया, कोरिया जैसे ममालिक में मदनी कामों की मदनी बहारें लुटा रही है बल्कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त दा'वते इस्लामी का मदनी पैग़ाम दुन्या भर में पहुंच चुका है ।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब

दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब, जै़ली ह़ल्क़े से शुरूअ़ हो कर मर्कज़ी मजलिसे शूरा तक है। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

1....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315

इस के बानी हैं। दा'वते इस्लामी की आ़लीशान इ़मारत में **ज़ैली ह़ल्क़ा** इस की बुन्याद और **मर्कज़ी मजलिसे शूरा** छत की ह़ैसिय्यत रखती है। दा'वते इस्लामी की मज़बूत़ी में अगर्चे इस का हर शो'बा अहम्मिय्यत का ह़ामिल है, मगर इस ह़क़ीक़त को हर आ़मो ख़ास जानता है कि इ़मारत की मज़बूत़ी, बुन्याद की मज़बूत़ी पर मुन्ह़सिर है। चुनान्चे, बिल्कुल वाज़ेह़ है कि दा'वते इस्लामी में ज़ैली ह़ल्क़े की अहम्मिय्यत किस क़द्र है ! जिस क़द्र ज़ैली ह़ल्क़ा मज़बूत़ होगा उसी क़द्र दा'वते इस्लामी मज़बूत़ और तरक़्क़ी के मज़ीद ज़ीने चढ़ती चली जाएगी और ज़ैली ह़ल्क़े की मज़बूत़ी, ज़ैली ह़ल्क़े में 8 मदनी कामों की मज़बूत़ी में है।

ज़ैली ह़ल्क़ा किसे कहते हैं ?

हर मस्जिद और इस के अत़राफ़ की आबादी, मसलन रिहाइशी मकानात, बाज़ार (Market), स्कूल (School), कॉलेज (College), सरकारी व सिविल इदारे (Government and civil Organizations) वग़ैरा को तन्ज़ीमी त़ौर पर **ज़ैली ह़ल्क़ा** क़रार दिया जाता है। बा'ज़ अवक़ात (Sometimes) दा'वते इस्लामी की मुतअ़ल्लिक़ा मुशावरत के निगरान किसी आबादी या इदारे वग़ैरा की अहम्मिय्यत के पेशे नज़र उसे अलग से भी **ज़ैली ह़ल्क़ा** बना देते हैं।

ज़ैली ह़ल्क़ा मुशावरत : दर्जे ज़ैल 3 ज़िम्मेदारान पर मुश्तमिल **ज़ैली ह़ल्क़ा मुशावरत** बनाई जाती है। ❶ ज़ैली ह़ल्क़ा मुशावरत ज़िम्मेदार ❷ मदनी दौरा ज़िम्मेदार ❸ मदनी इन्आ़मात ज़िम्मेदार।

मदीना : बा'ज़ ज़ैली ह़ल्क़ों में दा'वते इस्लामी के दीगर शो'बाजात की ज़ैली ज़िम्मेदारान भी अपने अपने शो'बाजात और मजालिस के त़ै कर्दा मदनी फूलों के मुत़ाबिक़ मदनी काम करती हैं, मगर वोह सब भी ज़ैली मुशावरत ज़िम्मेदारान के तह़्त ही होती हैं।

आठ मदनी कामों की मुख़्तसर वज़ाहत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आशिक़ाने रसूल की मदनी तहरीक दा'वते इस्लामी से वाबस्ता हर इस्लामी बहन का भी मदनी मक़्सद येह है कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ चुनान्चे, इस मदनी मक़्सद के हुसूल के लिये दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा की त़रफ़ से इस्लामी बहनों को जैली ह़ल्क़े के 8 मदनी काम दिये गए हैं, दिनों के ए'तिबार से अगर इन का जाइज़ा लिया जाए तो इन की तरतीब कुछ यूं बनती है :

रोज़ाना के 4 मदनी काम : ❶ इनफ़िरादी कोशिश ❷ घर दर्स ❸ बयान या मदनी मुज़ाकरा ❹ मद्रसतुल मदीना बालिग़ात

हफ़्तावार 2 मदनी काम : ❺ हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ ❻ मदनी दौरा

महाना 2 मदनी काम : ❼ माहाना तरबियती ह़ल्क़ा ❽ मदनी इन्आ़मात

आइये ! इन तमाम मदनी कामों का मुख़्तसर जाइज़ा लेती हैं।

रोज़ाना के 4 मदनी काम

❶ इनफ़िरादी कोशिश

(रोज़ाना कम अज़् कम 2 इस्लामी बहनों पर इनफ़िरादी कोशिश)

दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में चन्द (मसलन एक, दो, तीन) इस्लामी बहनों के अलग से नेकी की दा'वत देने (या'नी उन्हें समझाने) को इनफ़िरादी कोशिश कहते हैं।

इनफ़िरादी कोशिश की अहम्मिय्यत

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه : दा'वते इस्लामी का 99 % मदनी काम इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए ही मुमकिन है।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वाक़ेई इनफ़िरादी कोशिश इजतिमाई कोशिश से कहीं ज़ियादा मुअस्सिर साबित होती है। क्यूंकि बारहा देखा गया है कि वोह इस्लामी बहन जो बरसहा बरस से इजतिमाअ़ में शरीक होने की सआ़दत ह़ासिल कर रही थी उस ने दौराने बयान दी जाने वाली मुख़्तलिफ़ तरग़ीबात मसलन पांच वक़्त नमाज़ पढ़ने, रमज़ान के रोज़े रखने और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने वग़ैरा पर लब्बैक कहते हुए निय्यत भी की मगर इस के बा वुजूद अ़मली क़दम उठाने में नाकाम रही। लेकिन जब किसी ने उन से मुलाक़ात कर के इनफ़िरादी कोशिश करते हुए ब तदरीज मज़्कूरा बाला उमूर की तरग़ीब दी तो वोह इन पर अ़मल करने वाली बनती चली गई। गोया इजतिमाई कोशिश के ज़रीए लोहा गर्म हुवा और इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए उस गर्म लोहे पर चोट लगाई गई इसी त़रह़ इजतिमाई कोशिश के मुक़ाबले में एक या दो इस्लामी बहनों पर इनफ़िरादी कोशिश करना बेह़द आसान है क्यूंकि कसीर इस्लामी बहनों के सामने बयान करना हर एक के बस की बात नहीं जब कि इनफ़िरादी कोशिश हर एक कर सकती है। ख़्वाह उसे बयान करना आता हो या न आता हो, इस इनफ़िरादी कोशिश के नतीजे में तन्ज़ीमी फ़वाइद के इलावा हमें दर्जे ज़ैल फ़वाइद भी ह़ासिल होंगे। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

1....इनफ़िरादी कोशिश मअ़ 25 ह़िकायाते अ़त्तारिय्या, स. 22

(1) हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रहमते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नेकी की त़रफ़ रहनुमाई करने वाला भी नेकी करने वाले की त़रह़ है ।[1]

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : या'नी नेकी करने वाला, कराने वाला, बताने वाला (और) मश्वरा देने वाला सब सवाब के मुस्तह़िक़ (या'नी ह़क़दार) हैं ।[2]

(2) ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : या **अल्लाह** ! जो अपने भाई को बुलाए, उसे नेकी का ह़ुक्म दे और बुराई से मन्अ़ करे तो उस की जज़ा क्या है ? इरशाद फ़रमाया : मैं उस की हर बात पर एक साल की इ़बादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है ।[3]

2 घर दर्स

(हदफ़ फ़ी ज़ैली ह़ल्क़ा : कम अज़ कम एक इस्लामी बहन हदफ़ फ़ी ज़ैली ह़ल्क़ा : 12 घर दर्स)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की चन्द कुतुबो रसाइल के इ़लावा बाक़ी तमाम कुतुबो रसाइल बिल ख़ुसूस फ़ैज़ाने सुन्नत से घर में दर्स देने को तन्ज़ीमी इस्त़िलाह़ में घर दर्स कहते हैं । घर दर्स भी फ़रोग़े इ़ल्मे दीन की ही एक कड़ी है, जिस के लिये हर इस्लामी बहन को रोज़ाना कम अज़ कम एक घर दर्स की तरकीब बनाने की तरग़ीब दिलाई जाए ।

[1] .....ترمذی، ابواب العلم، باب ماجاء الدال علی الخیر کفاعلہ، ص۲۲۸، حدیث: ۲۶۷۰

[2] ....मिरआतुल मनाजीह़, इ़ल्म की किताब, पहली फ़स्ल, 1 / 194

[3] .....مکاشفۃ القلوب، ۱۵-باب فی الامر بالمعروف والنھی عن المنکر، ص۶۵

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कुतुबो रसाइल से मदनी दर्स दिया जाए। अलबत्ता ! बा'ज़ कुतुबो रसाइल से दर्स देने की इजाज़त नहीं, इन में से चन्द एक येह हैं : ❶ कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब ❷ 28 कलिमाते कुफ़्र ❸ गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आ़र ❹ पर्दे के बारे में सुवाल जवाब ❺ चन्दे के बारे में सुवाल जवाब ❻ अ़क़ीक़े के बारे में सुवाल जवाब ❼ इस्तिन्जा का त़रीक़ा ❽ नमाज़ के अह़काम ❾ इस्लामी बहनों की नमाज़ ❿ ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी ⓫ ना'त ख़्वां और नज़राना ⓬ क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां ⓭ कपड़े पाक करने का त़रीक़ा (मअ़ नजासतों का बयान) ⓮ रफ़ीक़ुल ह़रमैन ⓯ रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन ⓰ ह़लाल त़रीक़े से कमाने के 50 मदनी फूल।

नीज़ याद रखिये कि शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कुतुबो रसाइल के इ़लावा किसी और किताब से दर्स देने की मर्कज़ी मजलिसे शूरा की त़रफ़ से इजाज़त नहीं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

घर दर्स के 14 मदनी फूल

❶ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है।[1]

[1] .....حلیۃ الاولیاء، طبقات اھل المشرق، ۴۵۸-ابراھیم الھروی، ۱/۴۵، رقم: ۱۴۴۶

2 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीस सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए ।[1]

3 ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक नाम की एक ह़िक्मत येह भी है कि आप عَلَيْهِ السَّلَام अल्लाह पाक के अ़त़ाकर्दा सह़ीफ़े लोगों को कसरत से सुनाया करते थे लिहाज़ा आप عَلَيْهِ السَّلَام का नाम ही इदरीस (या'नी दर्स देने वाला) हो गया ।

4 ह़ुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰى صِرْتُ قُطْبًا (या'नी मैं इ़ल्म सीखता रहा यहां तक कि मक़ामे कुत़बिय्यत पर फ़ाइज़ हो गया)

5 दर्स देना भी दा'वते इस्लामी का एक मदनी काम है । घर, मद्रसा, स्कूल, कॉलेज वग़ैरा में (पर्दे की एह़तियात़ के साथ) वक़्त मुक़र्रर कर के दर्स के ज़रीए ख़ूब ख़ूब सुन्नतों के मदनी फूल लुटाइये और ढेरों सवाब कमाइये ।

6 रोज़ाना कम अज़ कम दो मदनी दर्स देने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल कीजिये । (इन दो में एक घर दर्स ज़रूर हो)

7 पारह 28 सूरतुत्तह़रीम की छटी आयत में इरशाद होता है ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पत्थर हैं ।

अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाने का एक ज़रीआ़ घर दर्स भी है ।

[1] ترمذی، ابواب العلم، باب جاء فی الحث علی التبلیغ السماع، ص ۶۲۶، حدیث: ۲۶۵۶

8 तमाम इस्लामी बहनें अपने घरवालों को (जिन में ना महरम न हों) पर इनफ़िरादी कोशिश कर के घर दर्स में शिर्कत करने के लिये तय्यार करें, मगर इस के लिये ज़िद न की जाए क्यूंकि बेजा ज़िद और गुस्से से काम बिगड़ जाता है।

है फ़लाहो कामरानी नर्मी व आसानी में
हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

❀ घर दर्स शुरूअ़ करने के लिये घर के उस महरम फ़र्द पर पहले कोशिश की जाए जिस के दिल में आप के लिये कुछ नर्म गोशा हो, अगर वोह शामिल हो जाएगा तो आहिस्ता आहिस्ता दूसरा भी शामिल होगा यूं ता'दाद बढ़ती जाएगी लेकिन येह मुआ़मला सब्र आज़मा है, इस में सब्र का दामन थामे रखना होगा।

9 दर्स हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अन्दाज़ में दीजिये।

10 जो कुछ दर्स देना है, पहले उस का कम अज़ कम एक बार मुत़ालआ़ कर लीजिये ताकि ग़लति़यां न हों।

11 मुअ़र्रब अल्फ़ाज़ (या'नी जिन लफ़्ज़ों पर ज़बर, ज़ेर और पेश लिखा हुवा है उन को) ए'राब के मुत़ाबिक़ ही अदा कीजिये, इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी की आ़दत बनेगी।

12 ह़म्दो सलात, दुरूदो सलाम के चारों सीग़े आयते दुरूद और इख़्ति़तामी आयात वग़ैरा किसी सुन्नी आ़लिमा या क़ारिया को ज़रूर सुना दीजिये। इसी त़रह़ अ़रबी दुआ़एं वग़ैरा जब तक दुरुस्त तजवीद वाली इस्लामी बहन को न सुना लें, अकेले में अपने त़ौर पर भी न पढ़ा करें।

13 दर्स मअ़ इख़्ति़तामी दुआ़ सात मिनट के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लीजिये।

14 हर मुअ़ल्लिमा (दर्स देने वाली) को चाहिये कि वोह दर्स का त़रीक़ा, बा'द की तरग़ीब और इख़्ति़तामी दुआ़ ज़बानी याद कर ले।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

घर में दर्स देने के मक़ासिद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बक़दरे ज़रूरत इल्मे दीन सीखना, चूंकि हर मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है, लिहाज़ा ज़रूरी इल्मे दीन सीखने के लिये घर दर्स एक बहुत बड़ा ज़रीआ़ है। चुनान्चे, घर दर्स देने के मक़ासिद दर्जे ज़ैल हैं :

❁ दर्स देने का सब से बड़ा मक़्सद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा है।

❁ इस के ज़रीए घरवालों को अह्ले महब्बत बल्कि ह़क़ीक़ी मा'नों में दा'वते इस्लामी वाला बनाना है।

❁ शुरकाए दर्स को मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कर के मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने की तरग़ीब दिलानी है और मह़ारिम को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने और करवाने के साथ साथ **दीगर मदनी कामों** में अ़मली तौ़र पर शामिल होने का ज़ेहन भी देना है।

❁ शुरकाए दर्स को दा'वते इस्लामी का मुबल्लिग़ व मुअ़ल्लिम / मुबल्लिग़ा व मुअ़ल्लिमा बनाना है।

इलाही हर मुबल्लिग़ पैकरे इख़्लास बन जाए
करम हो दा'वते इस्लामी वालों पर करम मौला[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी दर्स देने का त़रीक़ा

(फ़ैज़ाने सुन्नत और अमीरे अह्ले सुन्नत की दीगर कुतुबो रसाइल से दर्स देने को मदनी दर्स कहा जाता है)

दर्स देने वाली के लिये हिदायात : दर्स देने वाली ब्रेकेट () में जो तह़रीर है उसे पढ़ने के बजाए अ़मल करें। (**तीन बार इस त़रह़ ए'लान फ़रमाइये**)

क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइये।

1....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 99

(फिर पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर इस त़रह़ इब्तिदा कीजिये)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

(इस के बा'द इस त़रह़ दुरूदो सलाम पढ़ाइये)

(फिर इस त़रह़ कहिये)

क़रीब क़रीब आ कर मदनी दर्स की ता'ज़ीम की निय्यत से हो सके तो दो ज़ानू बैठ जाइये, अगर थक जाएं तो जिस त़रह़ आप को आसानी हो उसी त़रह़ बैठ कर निगाहें नीची किये तवज्जोह के साथ मदनी दर्स सुनिये कि लापरवाही के साथ इधर उधर देखते हुए, ज़मीन पर उंगली से खेलते हुए, लिबास, बदन या बालों वग़ैरा को सहलाते हुए सुनने से इस की बरकतें ज़ाइल होने का अन्देशा है। (बयान के आग़ाज़ में भी इसी अन्दाज़ में तरग़ीब दिलाइये) येह कहने के बा'द फ़ैज़ाने सुन्नत वग़ैरा से देख कर दुरूद शरीफ़ की एक फ़ज़ीलत बयान कीजिये। (**फिर कहिये**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(जो कुछ लिखा हुवा है वोही पढ़ कर सुनाइये। आयात व अ़रबी इबारात का सिर्फ़ तर्जमा पढ़िये। किसी भी आयत या ह़दीस का अपनी राए से हरगिज़ ख़ुलासा मत कीजिये)

मदनी दर्स के आख़िर में इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइये!

(हर मुअ़ल्लिमा को चाहिये कि ज़बानी याद कर ले और दर्सो बयान के आख़िर में बिला कमी व बेशी इसी त़रह़ तरग़ीब दिलाया करे)

ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्क़े मुस्तफ़ा के हुसूल के लिये हर हफ़्ते को इशा की नमाज़ के बा'द अमीरे अह्ले सुन्नत का मदनी मुज़ाकरा देखने सुनने, दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में ब निय्यते सवाब शिर्कत और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **नेक बनने का नुस्ख़ा** बनाम मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां की ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा। हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये महारिम को मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(आख़िर में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ (ख़ुशूअ़ या'नी बदन की आ़जिज़ी और ख़ुज़ूअ़ या'नी दिलो दिमाग़ की ह़ाज़िरी) के साथ दुआ़ में हाथ उठाने के आदाब बजा लाते हुए बिला कमी व बेशी इस त़रह़ दुआ़ मांगिये)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

या रब्बे मुस्तफ़ा ! ब तुफ़ैले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारी, हमारे मां बाप की और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। या **अल्लाह** पाक दर्स की ग़लतियां और तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा, हमें आ़शिक़े रसूल, परहेज़गार और मां बाप का फ़रमां बरदार बना। या **अल्लाह** पाक ! हमें मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने और अपने महारिम को मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र

करवाने और इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए दूसरों को भी मदनी कामों की तरग़ीब दिलाने का जज़्बा अ़ता फ़रमा। या **अल्लाह** पाक ! मुसलमानों को बीमारियों, क़र्ज़दारियों, बे रोज़गारियों, बे औलादियों, झूटे मुक़द्दमों और त़रह़ त़रह़ की परेशानियों से नजात अ़ता फ़रमा। या **अल्लाह** पाक ! इस्लाम का बोल बाला कर। या **अल्लाह** पाक ! हमें दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा। या **अल्लाह** पाक ! हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। या **अल्लाह** पाक ! मदीने की ख़ुश्बूदार ठन्डी ठन्डी हवाओं का वासित़ा हमारी जाइज़ मुरादों पर रह़मत की नज़र फ़रमा।

कहते रहते हैं दुआ के वासित़े बन्दे तेरे
कर दे पूरी आरज़ू हर बेकसो मजबूर की (1)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(शे'र के बा'द येह आयते मुबारका पढ़िये)

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓىِٕكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲، الاحزاب: ۵۶)

(सब दुरूद शरीफ़ पढ़ लें तो फिर पढ़िये)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾
وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾ (پ۲۳، الصفت: ۱۸۰تا۱۸۲)

(आख़िर में कलिमा पढ़ कर सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से मुंह पर दोनों हाथ फेर लीजिये)

1....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 99

दुआए अ़त्तार : या **अल्लाह** पाक ! मुझे और जो घर दर्स देते हैं या देती हैं उन सब को बल्कि हम सब को अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस में जन्नतुल फ़िरदौस में जगह अ़ता फ़रमा। या **अल्लाह** पाक ! जो रहती दुन्या तक दा'वते इस्लामी से वाबस्ता रहते हुए घर दर्स की तरकीब करता रहेगा उन के ह़क़ में भी मेरी येह टूटी फूटी दुआ क़बूल कर ले।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

3 बयान या मदनी मुज़ाकरा

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबारका पर **अल्लाह** पाक और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ास करम है। आप की तह़रीर के साथ साथ आप की ज़बाने मुबारक में भी **अल्लाह** पाक ने ऐसी तासीर अ़ता फ़रमाई है कि कई गुनाहगार आप के सुन्नतों भरे बयानात और मदनी मुज़ाकरों की बरकत से ताइब हो कर नेकियों पर गामज़न हो चुके हैं, नेकूकारों की रिक़्क़ते क़ल्बी में इज़ाफ़ा होता है आप की सोह़बत इस्लाह़े आ'माल का सबब बनती है। आप के फ़ैज़ान से दीगर मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी के बयानात भी इस्लाह़े मुआ़शरा का ज़रीआ़ बनते हैं, इसी लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में हर इस्लामी बहन को रोज़ाना कम अज़ कम एक बयान या मदनी मुज़ाकरा सुनने की तरग़ीब दिलाई जाती है ताकि इस के ज़रीए अपनी इस्लाह़ के मदनी फूल चुनने की सआ़दत ह़ासिल हो।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से अ़क़ाइदो आ'माल, शरीअ़तो त़रीक़त, तारीख़ो सीरत, त़बाबत व रूह़ानिय्यत वग़ैरा मुख़्तलिफ़

मौज़ूआ़त पर सुवालात (Questions) किये जाते हैं और आप उन के जवाबात (Answers) अ़ता फ़रमाते हैं, इस को दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ में **मदनी मुज़ाकरा** कहा जाता है और बरोज़ हफ़्ता (Saturday) बा'दे इ़शा होने वाले मदनी मुज़ाकरे को **हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा** का नाम दिया गया है। (हर **ईसवी माह के पहले हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरे** में बिल ख़ुसूस **इस्लामी बहनों** से मुतअ़ल्लिक़ा सुवालात मदनी मुन्नों या मदनी मुन्नियों या SMS वग़ैरा के ज़रीए़ भी शामिल किये जाते हैं)

"फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा जारी रहेगा" के 24 हुरूफ़ की निस्बत से मजलिसे मदनी मुज़ाकरा के चौबीस मदनी फूल

﴿आ़लमी मजलिसे मुशावरत (दा'वते इस्लामी)﴾

1 फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[1] इस लिये **मजलिसे मदनी मुज़ाकरा** की हर सत्ह़ की ज़िम्मेदार अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा **63 मदनी इन्आ़मात** में से **मदनी इन्आ़म नम्बर 1** पर अ़मल करते हुए येह निय्यत करती रहे कि **मैं अल्लाह पाक की रिज़ा और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के लिये दा'वते इस्लामी की मजलिसे मदनी मुज़ाकरा का मदनी काम मदनी मर्कज़ के त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ करूंगी।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो ज़िम्मेदारी हमें दी गई है उस के तक़ाज़े पूरे करना हम पर अख़्लाक़ी व तन्ज़ीमी त़ौर पर लाज़िम है।[2]

[1] ..... معجم کبیر، یحیی بن قیس الکندی عن ابی حازم، ۳/۵۲۵، حدیث: ۵۸۰۹

[2] ....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 31 जनवरी ता यकुम फ़रवरी 2016 ईसवी।

2 मजलिसे मदनी मुज़ाकरा का मदनी काम : दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हर मुन्सलिक और ज़िम्मेदार (ज़ैली ह़ल्क़ा ता आ़लमी, हर शो'बा, मदनी तरबियतगाह, जामिअ़तुल मदीना, मद्रसतुल मदीना, दारुल मदीना, मद्रसतुल मदीना ऑन लाइन (लिलबनात) की असातिज़ा, नाज़िमात, त़ालिबात, मदनी अ़मला वग़ैरा) बल्कि तमाम आ़शिक़ाते रसूल को भी मदनी मुज़ाकरा सुनने का आ़दी बनाना है।

★ हमारी ज़िम्मेदारी के ह़वाले से जो भी मदनी फूल हमें मिलते हैं वोह हमें ह़िफ़्ज़ होने चाहिये, तभी हमारे मदनी काम तरक़्क़ी कर सकेंगे मदनी फूल समझा कर आगे बढ़ाए जाएं, मदनी फूलों में दिये गए मदनी कामों की पूछगछ हो, यूं मदनी काम करते करते मदनी फूल ज़ेह्न नशीन हो जाएंगे।[1]

3 मजलिसे मदनी मुज़ाकरा की ज़िम्मेदारान, दीगर फ़र्ज़ उ़लूम के साथ साथ अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तमाम कुतुबो रसाइल का मुत़ालआ़ करें, अपने ज़ाती मसाइल के इ़लावा शो'बे से तअ़ल्लुक़ रखने वाले शरई मसाइल तै शुदा त़रीक़ेकार के मुत़ाबिक़ दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत से ह़ल करवाएं।

4 हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरे और मख़्सूस मवाक़ेअ़ (मसलन मुह़र्रमुल ह़राम के 10, रबीउ़ल अव्वल के 12, रबीउ़ल आख़िर के 11, रमज़ानुल मुबारक में रोज़ाना बा'दे अ़स्र और बा'दे इ़शा होने वाले और ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के 10) मदनी मुज़ाकरे न सिर्फ़ ख़ुद देखें बल्कि दीगर इस्लामी बहनों को भी देखने की तरग़ीब दिलाएं।

[1]....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 14 अप्रेल 2016 ईसवी।

★ आ़म इस्लामी बहनों को तरग़ीब ज़रूर दिलाई जाए मगर कारकर्दगी सिर्फ़ ज़िम्मेदारान से ली जाए इस का येह फ़ाएदा होगा कि ज़िम्मेदार पाबन्द भी होंगी और दुरुस्त कारकर्दगी सामने आएगी। ★ **मदनी मुज़ाकरे, फ़र्ज़ उ़लूम और दा'वते इस्लामी के मदनी काम सीखने का बेहतरीन ज़रीआ़ हैं।**[1] ★ मदनी मुज़ाकरे के ज़रीए़ आप तन्ज़ीम सीखेंगे। ★ मैं मदनी मुज़ाकरों के ज़रीए़ अपने तजरिबात से आप को आगाह कर रहा हूं, आप लेने वाले बनें। ★ ने'मत की क़द्र मह़रूमी के बा'द होती है।[2]

5 मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार (ज़ैली ता आ़लमी सत़ह़) मदनी मुज़ाकरा सुनने की याद दिहानी ब ज़रीअ़ए SMS, मेल या बिल मुशाफ़ा करवाती रहें और अपनी मा तह़्त इस्लामी बहनों का येह ज़ेह्न भी बनाएं कि हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा व मख़्सूस मवाक़ेअ़ के मदनी मुज़ाकरों को अपनी डायरी या रजिस्टर में लिख कर मह़फ़ूज़ भी करती रहें और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه जिन मदनी कामों की तरग़ीब दिलाएं उन पर अ़मल की निय्यत कर के उस काम को बजा लाएं और फिर उस मदनी काम को अपनी ज़िम्मेदार इस्लामी बहन को भी लिखवा दें।

6 **मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार** (अ़लाक़ा सत़ह़) तमाम हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में ए'लानात (ए'लानात तय्यार करने वाली इस को 4 हफ़्तों में तक़्सीम कर लें) के ज़रीए़ हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरे और मख़्सूस

[1]....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 3 ता 7 जनवरी 2011 ईसवी।

[2]....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 23 ता 26 दिसम्बर 2016 ईसवी।

मदनी माह (मुहर्रमुल हराम, रबीउ़ल अव्वल, रबीउ़ल आख़िर, रमज़ानुल मुबारक और ज़ुल हिज्जतिल हराम) में मदनी चैनल पर पेश किये जाने वाले मदनी मुज़ाकरे देखने / सुनने की भरपूर तरग़ीब दिलाएं। (नमूनतन मदनी मुज़ाकरा सुनने के लिये तरग़ीबी ए'लान इसी रिसाले में मौजूद है)

7 मदनी मुज़ाकरा सुनने के लिये दर्जे ज़ैल ज़राएअ़ इख़्तियार किये जा सकते हैं :

★ मदनी मुज़ाकरा सुनने के दौरान अगर लाइट जाने का वक़्त हो तो ऐसी सूरत में UPS / जनरेटर की सहूलत हो तो उस ज़रीए़ से ★ इन्टरनेट की सहूलत हो तो Chargeable लेप टॉप / Tablet PC के ज़रीए़ ★ मदनी चैनल रेडियो एपलीकेशन के ज़रीए़

8 मुख़्तलिफ़ Call Packages के ज़रीए़ अगर दूसरे अ़लाक़े में कहीं लाइट हो तो T.V के पास फ़ोन को रख कर सुनने की तरकीब बनाई जाए।

9 अगर किसी उ़ज़्र के सबब मदनी मुज़ाकरा Live न सुन पाएं तो अगले दिन Repeat होने पर सुन लिया जाए। या ब सूरते दीगर website से download किया जा सकता है।

★ अलबत्ता live मदनी मुज़ाकरा record करने की मजलिसे मदनी मुज़ाकरा की त़रफ़ से इजाज़त नहीं है।

10 हर सत़्ह़ की ज़िम्मेदार इस्लामी बहन ख़ुद भी और अपनी मा तह़्त इस्लामी बहन को येही तरग़ीब दिलाएं कि अपनी घरेलू ज़िम्मेदारियों और मदनी कामों की दिन भर में इस त़रह़ तरकीब बनाएं कि मदनी मुज़ाकरे के दौरान किसी भी क़िस्म की तरकीब न बनाई जाए।

★ नीन्द की क़ुरबानी दे कर अव्वल ता आख़िर मुकम्मल मदनी मुज़ाकरा सुनने की तरकीब बनाई जाए।

⓫ हर सत्ह़ की मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदारान Live मदनी मुज़ाकरे सुनने के साथ साथ रोज़ाना अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का एक मदनी मुज़ाकरा vcd / dvd वग़ैरा ख़ुद भी सुनें और घरवालों को भी सुनने की तरग़ीब दिलाएं।

★ अमीरे अह्ले सुन्नत के मदनी मुज़ाकरे या बयानात Software cd's और मेमोरी कार्ड, नीज़ वेब साइट www.dawateislami.net और www.ilyasqadri.net से ह़ासिल किये जा सकते हैं। ★ जो रोज़ाना एक बयान या मदनी मुज़ाकरा सुने अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उस से बे इन्तिहा ख़ुश होते हैं। (रिसाला मदनी इन्आ़मात सफ़ह़ा नम्बर 19) ★ अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : एक बार सुनने से भी गुज़ारा नहीं, इस को बार बार सुनते रहें इसे अपनी ख़ूराक बना लें, बयानात व मदनी मुज़ाकरे को सुनना अगर ख़ूराके रूह़ानी बना लिया तो अ़लाक़े में मदनी काम न सिर्फ़ बढ़ेगा बल्कि दौड़ेगा नहीं नहीं उस को तो पर लग जाएंगे और वोह उड़ता हुवा जानिबे मदीना रवां दवां हो जाएगा। (मदनी मुज़ाकरा नम्बर 65)

⓬ घर में dvd / vcd बयान या मदनी मुज़ाकरा सुनने सुनाने के लिये ऐसा वक़्त मुक़र्रर किया जाए जिस में घरवालों की दीगर मसरूफ़िय्यात कम हों ताकि मुकम्मल यक्सूई और तवज्जोह के साथ बयान सुनने की तरकीब बनाई जा सके।

⓭ माहाना तरबियती ह़ल्क़े में, मद्रसतुल मदीना (बालिग़ात) में हफ़्तावार और जामिअ़तुल मदीना (लिलबनात) में रोज़ाना केसेट बयान या मदनी मुज़ाकरा vcd / dvd सुनने की तरकीब बनाई जाए।

14 हर अंग्रेज़ी माह के पहले हफ़्ते में इस्लामी बहनों के सुवालात चलाने का सिलसिला होता है, येह सुवालात 15 दिन पहले अपने महारिम वग़ैरा से मदनी चैनल पर रेकॉर्ड करवाए जाएं। मदनी मुन्नियों की उ़म्र ज़ियादा से ज़ियादा 7 साल हो, Video भी करवाए जा सकते हैं।

★ मदनी मुन्नियों से जब सुवालात रेकॉर्ड करवाएं तो Camera सिर्फ़ चेहरे पर न रखें, दूर से रेकॉर्ड करवाएं, मदनी मुन्नी अपनी उ़म्र भी बताए नीज़ जब भी Video रेकॉर्ड करवाएं तो Light का ख़ास ख़याल रखें, Camera का रिज़ल्ट देख लें, Camera लिटा कर रेकॉर्ड करें, हाथ कांप न रहे हों और शोरो ग़ुल भी न हो।

15 ह़दीसे पाक में है : تَهَادَوا تَحَابُّوا या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो, आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।[1] पर अ़मल की निय्यत से हर माह मदनी मुज़ाकरा सुनने वाली इस्लामी बहनों की ता'दाद में इज़ाफ़ा होने की सूरत में मुम्किना सूरत में ज़ाती रक़म से तरकीब बना कर मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ कुतुबो रसाइल और Memory Cards, DVDs, VCDs वग़ैरा हर माह पाबन्दी से तक़्सीम करें। मज़ीद मक्तबतुल मदीना की दीगर मत़बूआ़ कुतुबो रसाइल ख़ुशी व ग़मी (शादी, फ़ौतगी, चेह्लम वग़ैरा), तक्लीफ़ व आज़माइश (बे रोज़गारी, बे औलादी व नाचाक़ी और बीमारी वग़ैरा) के मवाक़ेअ़ पर तक़्सीम की तरग़ीब दिलाना मुफ़ीद है।

16 **ज़िम्मेदारान की तक़र्रुरी की तरकीब :** मजलिसे मदनी मुज़ाकरा के मदनी काम के लिये ज़िम्मेदारान का तक़र्रुर ज़ैली ता आ़लमी सत़ह़ है।

★ हर सत़ह़ की **मजलिसे मदनी मुज़ाकरा** ज़िम्मेदार इस्लामी बहन बुर्दबार, इत़ाअ़त गुज़ार, वफ़ादार, बा किरदार, बा अख़्लाक़, सुल्झी हुई, सन्जीदा, एह़सासे ज़िम्मेदारी रखने वाली, शरई पर्दा करने वाली, ज़ाती दोस्तियों से

[1] ..... مؤطا امام مالك، كتاب حسن الخلق، باب ماجاء فى المهاجرة، ص ۴۸۳، حديث: ۱۷۳۱

बचने वाली, मदनी इन्आ़मात की आ़मिला बिल ख़ुसूस मदनी इन्आ़म नम्बर 47 की पाबन्द नीज़ पाबन्दी के साथ मदनी मुज़ाकरे देखने / सुनने की आ़दी, दा'वते इस्लामी के मदनी उसूलों की आईनादार, इस्तिलाहाते दा'वते इस्लामी से वाक़िफ़, मदनी मश्वरों और तरबियती ह़ल्क़े की पाबन्द, अल ग़रज़ सरापा तरग़ीब हो, अ़मली तौ़र पर मदनी कामों में शरीक हो।

★ मजलिसे मुशावरत ज़िम्मेदार ही **मजलिसे मदनी मुज़ाकरा** ज़िम्मेदार हो।

★ किसी भी सत्ह़ और किसी भी शो'बे पर इस्लामी बहन का तक़र्रुर सिर्फ़ इस बिना पर न किया जाए कि उन के महरम (इस्लामी भाई) इस शो'बे के ज़िम्मेदार हैं बल्कि येह देखा जाए कि क्या वोह इस्लामी बहन इस मदनी काम की अह्ल हैं ? 11 मई 2009 के निगराने शूरा के मदनी मश्वरे में येह मदनी फूल भी मौजूद है कि **अह्ल और हम ज़ेह्न** को मदनी काम दिये जाएं।

माहाना मदनी मश्वरे की तारीख़ें	सत्ह़	ज़िम्मेदार इस्लामी बहन
3	ज़ैली ह़ल्क़ा	मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (ज़ैली सत्ह़)
4	ह़ल्क़ा	मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (ह़ल्क़ा सत्ह़)
5	अ़लाक़ा	मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (अ़लाक़ा सत्ह़)
7	डिवीज़न	मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (डिवीज़न सत्ह़)
9	काबीना	मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (काबीना सत्ह़)
11	ज़ोन	मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (ज़ोन सत्ह़)
13	मुल्क	मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (मुल्क सत्ह़)
13	ममालिक	मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (ममालिक सत्ह़)
15	आ़लमी	मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (आ़लमी सत्ह़)

⓱ **माहाना अहदाफ़ :** हर सत्ह़ की मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार इस्लामी बहन माहाना अहदाफ़ तै़ करे और उसे अपनी ज़िम्मेदार इस्लामी बहनों में तक़्सीम कर के ख़ुश दिली के साथ मदनी मुज़ाकरा सुनने वालियों की ता'दाद में इज़ाफ़ा करती रहे।

⓲ मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदारान (ज़ैली ह़ल्क़ा ता आ़लमी सत्ह़) हर ईसवी माह की 19 से 26 तारीख़ तक अपना **पेशगी जदवल** और 2 तारीख़ तक अपना **कारकर्दगी जदवल** अपनी मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाएं। (मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदारान (ज़ैली ता आ़लमी सत्ह़) के **जदवल** और **पेशगी जदवल** मदनी फूल बराए ज़िम्मेदार इस्लामी बहन में मौजूद हैं।)

★ मदनी मश्वरों की कसरत से बचने के लिये मुक़र्रर कर्दा सत्ह़ के इलावा किसी और सत्ह़ का मदनी मश्वरा लेने के लिये अपनी मुतअ़ल्लिक़ा मजलिसे मुशावरत ज़िम्मेदार इस्लामी बहन की इजाज़त ज़रूरी है।

⓳ **कारकर्दगी फ़ॉर्म की तारीख़ें :** मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदारान (ज़ैली ह़ल्क़ा ता आ़लमी सत्ह़) माहाना मदनी मुज़ाकरा कारकर्दगी (ज़ैली ता आ़लमी सत्ह़) हर ईसवी माह की दर्जे ज़ैल तारीख़ों के मुत़ाबिक़ कारकर्दगी जम्अ़ करवाएं :

काबीनात सत्ह़ : 10 मुल्क सत्ह़ : 12 ममालिक सत्ह़ : 12 आ़लमी सत्ह़ : 14 माहाना मदनी मुज़ाकरा कारकर्दगी (ज़ैली ता आ़लमी सत्ह़ रेकॉर्ड फ़ाइल में मौजूद हैं)

⓴ मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदारान (ज़ैली ता आ़लमी सत्ह़), **ज़ैली ता आ़लमी कारकर्दगी मजलिसे मदनी मुज़ाकरा** अपनी मा तह़्त ज़िम्मेदारान की कारकर्दगियों को मद्दे नज़र रख कर पुर फ़रमाएं। (याद रहे ! कारकर्दगी मदनी मश्वरे से मशरूत़ नहीं, अगर किसी वज्ह से मदनी मश्वरा न हो सके

तब भी मुक़र्ररा तारीख़ पर अपनी ज़िम्मेदार इस्लामी बहन को कारकर्दगी पेश कर दें)

★ मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदारान (ज़ैली ता आ़लमी सत्ह़) अपनी ज़िम्मेदार इस्लामी बहन से मरबूत़ रहें, उन्हें अपनी कारकर्दगी से आगाह रखें और उन से मश्वरा करती रहें, जो ज़िम्मेदार से जितनी ज़ियादा मरबूत़ रहेगी वोह उतनी ही मज़बूत़ होती जाएगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

21 मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदारान (ह़ल्क़ा ता आ़लमी सत्ह़) में से जब मुतअ़ल्लिक़ा शो'बे की नई ज़िम्मेदार का तक़र्रुर हो तो मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मेदार मुनासिब वक़्त दे कर येह मदनी फूल समझाने की तरकीब बनाएं जब कि बैरूने ममालिक में उस मुल्क की नोइय्यत के ए'तिबार से ख़ास ख़ास मदनी फूल हाईलाइट कर के सिर्फ़ वोही समझाए जाएं।

22 मदनी मुज़ाकरों की मदनी बहारों को त़ै शुदा त़रीक़े कार के मुत़ाबिक़ **मदनी बहार फ़ॉर्म** में लिख लिया जाए (मदनी बहार फ़ॉर्म पुर करते वक़्त देख लीजिये कि कवाइफ़ (फ़ोन नम्बर और एड्रेस वग़ैरा) नामुकम्मल तो नहीं, अगर नामुकम्मल हों तो हाथों हाथ मुकम्मल करवा लीजिये अगर किसी मक़ाम पर मदनी बहार फ़ॉर्म मौजूद न हो तो सादा काग़ज़ पर मदनी मर्कज़ के बयान कर्दा त़रीक़ेकार के मुत़ाबिक़ लिखवा कर जम्अ़ करवा दीजिये।) नीज़ मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार (काबीनात सत्ह़) मौसूल होने वाली मदनी बहारों की ता'दाद **मजलिसे मदनी बहारें ज़िम्मेदार** (काबीनात सत्ह़) को बता दें।

23 मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदारान (ज़ैली ता आ़लमी सत्ह़) अपनी दुन्या और आख़िरत की बेहतरी के लिये दर्जे ज़ैल उमूर को अपनाने की कोशिश फ़रमाएं :

★ फ़र्ज़ उ़लूम सीखने की कोशिश करती रहें। फ़र्ज़ उ़लूम सीखने के लिये कुतुबे अमीरे अहले सुन्नत, बहारे शरीअ़त, फ़तावा रज़विय्या, इह़याउल उ़लूम

वग़ैरा के मुत़ालए़ की आ़दत बनाएं। ख़ुसूसन सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इस्लामी अ़क़ाइद से मुतअ़ल्लिक़ किताब बनाम **किताबुल अ़क़ाइद** (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना), बहारे शरीअ़त का पहला ह़िस्सा, कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, मसाइल सीखने के लिये बहारे शरीअ़त के मुन्तख़ब अबवाब और ह़िस्सों के साथ साथ अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की जुम्ला कुतुबो रसाइल, अच्छे बुरे अख़्लाक़ की मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये **बात़िनी बीमारियों की मा'लूमात,** अच्छे अख़्लाक़ ह़ासिल करने के त़रीक़े पर मब्नी मुन्जियात की किताबें (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ कीजिये। मुत़ालआ़ करने के लिये कुछ वक़्त मसलन (सुब्ह़ 19 मिनट) अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कुतुबो रसाइल के लिये और इसी त़रह़ दीगर कुतुब के लिये भी कुछ वक़्त मसलन (बा'दे मग़रिब व क़ब्ले त़आ़म 19 मिनट) ख़ास कीजिये।

★ बुर्क़अ़ की पाबन्दी करें और दीदाज़ेब बुर्क़अ़ पहनने से इजतिनाब करें।

★ अ़मली त़ौर पर मदनी कामों में शरीक हों। रोज़ाना कम अज़ कम 2 घन्टे मदनी कामों में सर्फ़ करें, पाबन्दिये वक़्त के साथ अव्वल ता आख़िर हफ़्तावार इजतिमाआ़त और तरबियती ह़ल्क़े में शिर्कत वग़ैरा।

★ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल के साथ साथ रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए हर माह मदनी इन्आ़मात का रिसाला अपनी ज़िम्मेदार इस्लामी बहन को जम्अ़ करवाएं और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये अपने मह़ारिम को उ़म्र भर में यकमुश्त 12 माह, हर 12 माह में एक माह और हर माह में कम अज़ कम 3 दिन जदवल के मुत़ाबिक़ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दिलाती रहें।

★ बिलानाग़ा फ़िक्रे मदीना करते हुए अ़त्तार की अजमेरी, बग़दादी, मक्की और मदनी बेटी बनने की सई जारी रखें। नीज़ मुस्तक़िल कुफ़्ले मदीना तह़रीक

में शुमूलिय्यत इख़्तियार करते हुए ज़रूरी गुफ़्तगू कम लफ़्ज़ों में, कुछ इशारे में और कुछ लिख कर करने की कोशिश के साथ साथ निगाहें झुका कर रखने की तरकीब बनाएं।

★ मर्कज़ी मजलिसे शूरा, काबीना और अपने शो'बे के मदनी मश्वरों के मिलने वाले मदनी फूलों का ख़ुद भी मुत़ालआ़ करें और मुतअ़ल्लिक़ा तमाम ज़िम्मेदारान तक बर वक़्त पहुंचाने की तरकीब बनाएं।

★ मदनी काम इस्तिक़ामत के साथ करने के लिये बिल ख़ुसूस मदनी इन्आ़म नम्बर 21 और 24 की आ़मिला बन जाएं।

★ **मदनी इन्आ़म नम्बर 21 :** क्या आज आप ने मर्कज़ी मजलिसे शूरा, काबीनात, मुशावरतें व दीगर तमाम मजालिस जिस की भी आप मा तह़्त हैं, उन की (शरीअ़त के दाइरे में रह कर) इत़ाअ़त फ़रमाई ?

★ **मदनी इन्आ़म नम्बर 24 :** किसी ज़िम्मेदार (या आ़म इस्लामी बहन) से बुराई सादिर होने की सूरत में तह़रीरी त़ौर पर या बराहे रास्त मिल कर (दोनों सूरतों में नर्मी के साथ) समझाने की कोशिश फ़रमाई या مَعَاذَاللّٰه बिला इजाज़ते शरई किसी और पर इज़हार कर के आप ग़ीबत का गुनाहे कबीरा कर बैठीं ?

24 पूछगछ : फ़रमाने अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه : पूछगछ मदनी कामों की जान है।

★ मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (ज़ैली ता आ़लमी सत़ह़) **मदनी फूल बराए हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा** में मौजूद मदनी काम अपने पास डायरी में बत़ौरे याददाश्त तह़रीर फ़रमा लें या नुमायां (हाईलाइट) कर लें ताकि बर वक़्त हर मदनी फूल पर अ़मल हो सके।

★ मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (ज़ैली ता आ़लमी सत़ह़) अपनी मा तह़्त ज़िम्मेदारान से माहाना मदनी मश्वरे में भी पूछगछ फ़रमाएं कि इन मदनी फूलों पर कहां तक अ़मल हुवा ?

★ कमज़ोरी होने पर मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मेदारान की तफ़्हीम और आयिन्दा बेहतरी के लिये लाइह़ए अ़मल तय्यार करें।

★ मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (ज़ैली ता आ़लमी सत्ह़) **मदनी फूल बराए मजलिसे हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा** मअ़ तमाम रेकॉर्ड पेपर्ज़ Display file में तरतीब वार रख कर महफ़ूज़ फ़रमा लें।

★ **मदनी फूल बराए मजलिसे हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा** से मुतअ़ल्लिक़ अगर कोई मदनी मश्वरा हो तो तन्ज़ीमी तरकीब के मुताबिक़ अपनी ज़िम्मेदार इस्लामी बहन तक पहुंचाएं।

★ **मदनी फूल बराए मजलिसे हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा** से मुतअ़ल्लिक़ अगर कोई मस्अला दरपेश हो तो तन्ज़ीमी तरकीब के मुताबिक़ अपनी ज़िम्मेदार इस्लामी बहन तक पहुंचाएं।

★ मजलिसे मदनी मुज़ाकरा ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (काबीना सत्ह़) शरई सफ़र होने की सूरत में बह़ालते मजबूरी टेलीफ़ोनिक मदनी मश्वरे के ज़रीए भी मदनी फूल समझा सकती हैं।

★ अपने मुल्क के ह़ालात व नोइय्यत के मुताबिक़ अपने मुल्की निगरान और मुतअ़ल्लिक़ा ममालिक ज़िम्मेदार की इजाज़त से इन मदनी फूलों में ह़स्बे ज़रूरत तरमीम की जा सकती है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

4 मद्रसतुल मदीना बालिग़ात

(हदफ़ : फ़ी ज़ैली ह़ल्क़ा कम अज़ कम एक मद्रसतुल मदीना बालिग़ात, शुरका : 12 इस्लामी बहनें, दौरानिया एक घन्टा 12 मिनट)

दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में रोज़ाना ज़ैली ह़ल्क़े में बड़ी उ़म्र की इस्लामी बहनों को दुरुस्त मख़ारिज के साथ क़ुरआने करीम पढ़ाने का सिलसिला होता है जिसे मद्रसतुल मदीना बालिग़ात कहते हैं।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़ुरआन अ़रबी ज़बान (Arabic language) में अ़रबी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुवा। रसूले अ़रबी

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे अ़रबी लबो लहजे में पढ़ने का हुक्म कुछ यूं इरशाद फ़रमाया : اِقْرَؤُوا الْقُرْاٰنَ بِلُحُوْنِ الْعَرَب या'नी कुरआन को अ़रबी लबो लहजे में पढ़ो।[1] मगर बद क़िस्मती ! मख़ारिज की दुरुस्ती के साथ अ़रबी लबो लहजे में अब कुरआने करीम पढ़ने वाले बहुत ही कम हैं। ح और ہ, ذ،ز،ظ،ض और ث، س، ص. और ع और ء में फ़र्क़ कर के पढ़ने वालियां बहुत ही कम हैं। याद रखिये ! दुरुस्त मख़ारिज के साथ कुरआन पढ़ना फ़र्ज़ है, ح और ہ, ذ،ز،ظ،ض और ث، س، ص. और ع और ء की अदाएगी में वाज़ेह फ़र्क़ होना चाहिये, लह्ने जली (या'नी ह़र्फ़ को ह़र्फ़ से बदलने की वज्ह) से अगर मा'ना फ़ासिद हो जाएं, तो नमाज़ भी फ़ासिद हो जाती है। चुनान्चे, येही वज्ह है कि वोह इस्लामी बहन जो दुरुस्त मख़ारिज के साथ कुरआने करीम पढ़ना नहीं जानतीं, उन्हें मद्रसतुल मदीना (बालिग़ात) के तह़्त दुरुस्त मख़ारिज के साथ कुरआने करीम पढ़ने पढ़ाने का एहतिमाम किया जाता है। क्यूंकि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : خَیْرُکُمْ مَّنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَہٗ या'नी तुम में सब से बेहतर वोह है जिस ने कुरआन की ता'लीम ह़ासिल की और दूसरों को इस की ता'लीम दी।[2]

मदनी फूल : सुब्ह़ 8 ता अज़ाने अ़स्र किसी भी वक़्त किसी बा पर्दा मक़ाम पर रोज़ाना एक घन्टा 12 मिनट मद्रसतुल मदीना (बालिग़ात) की तरकीब होनी चाहिये, अगर ज़ैली ह़ल्क़ों में मद्रसतुल मदीना (बालिग़ात) मज़बूत़ हो जाएं तो 8 मदनी कामों की मदनी बहारें आ सकती हैं। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मद्रसतुल मदीना (बालिग़ात) के **26 मदनी फूल** का मुत़ालआ़ फ़रमाएं)

दे शौक़े तिलावत दे ज़ौक़े इबादत *रहूं बा वुज़ू मैं सदा या इलाही*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

[1] .....معجم اوسط، باب المیم من اسمہ محمد، ۵/۲۴۷، حدیث: ۷۲۲۳

[2] ..... بخاری، کتاب فضائل القران، باب خیر کم من...الخ، ص ۱۲۹۹، حدیث: ۵۰۲۷

हफ़्तावार 2 मदनी काम

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते **सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मिन्हाजुल आ़बिदीन में फ़रमाते हैं : मुसलमानों की इजतिमाई इ़बादत से दीन को तक़्विय़त पहुंचती है, इस्लाम का जमाल ज़ाहिर होता है और कुफ़्फ़ार व मुल्ह़िदीन (बे दीन) मुसलमानों का इजतिमाअ़ देख कर जलते हैं और जुमुआ़ वग़ैरा दीनी इजतिमाआ़त पर **अल्लाह** तआ़ला की बरकतें और रह़मतें नाज़िल होती हैं, लिहाज़ा गोशा नशीन शख़्स पर लाज़िम है कि जुमुआ़, जमाअ़त व दीनी इजतिमाआ़त में आ़म मुसलमानों के साथ शरीक रहे।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मुसलमानों के इजतिमाआ़त इस्लाम की शानो शौकत का मज़ह़र ही नहीं बल्कि शरई अह़काम सीखने का भी एक बहुत बड़ा ज़रीआ़ हैं और इन के लिये अगर कोई ख़ास दिन मुतअ़य्यन कर लिया जाए तो हर शख़्स के लिये इस एक दिन जम्अ़ होना भी मुम्किन है। मसलन जब मदीने में इस्लाम का पैग़ाम आ़म हुवा और शह्र व अत़राफ़ से लोग जौक़ दर जौक़ दाइरए इस्लाम में दाख़िल होने लगे तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को बारगाहे नबुव्वत से नमाज़े जुमुआ़ क़ाइम करने का हुक्म इरशाद हुवा[1] ताकि वोह उस दिन तमाम अफ़राद को इजतिमाई त़ौर पर इस्लामी अह़कामात सिखाएं। इसी त़रह़ सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने भी जुमे'रात का दिन लोगों को वा'ज़ो नसीह़त के लिये मख़्सूस कर रखा था।[2] चुनान्चे, वा'ज़ो नसीह़त के इसी सिलसिले को जारी रखते हुए दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में हफ़्तावार इजतिमाआ़त की तरकीब कुछ यूं बनाई गई है :

[1] .....البدایہ والنہایہ، باب بدء اسلام الانصار، المجلد الثانی، ۳/۱۶۳

[2] .....بخاری، کتاب العلم، باب من جعل لاھل العلم ایاما معلومۃ، ص۹۱، حدیث: ۷۰

5 हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़

(हदफ़ फ़ी ज़ैली ह़ल्क़ा : हफ़्तावार इजतिमाअ़ 1 और फ़ी ज़ैली ह़ल्क़ा शुरकाए इजतिमाअ़ कम अज़ कम 12 इस्लामी बहनें, अव्वल ता आख़िर शिर्कत)

हफ़्ते में कोई एक दिन मुक़र्रर कर के 2 घन्टे के दौरानिये में ज़ैली ह़ल्क़ा / ह़ल्क़ा / अ़लाक़ा (शहर) सत्ह़ पर बा पर्दा मक़ाम पर इस्लामी बहनों का हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ मुन्अ़क़िद किया जाता है। इस के इ़लावा डिवीज़न सत्ह़ पर हर इतवार को भी इस्लामी बहनों का इजतिमाअ़ होता है जिस में निगराने शूरा या मुख़्तलिफ़ अराकीने शूरा के मदनी चैनल पर Live बयानात का सिलसिला होता है।

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की तरकीब

★ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ के लिये समझदार, वक़्त की पाबन्द, बा सलाहिय्यत, एह़सासे ज़िम्मेदारी रखने वाली इस्लामी बहन को **इजतिमाअ़ ज़िम्मेदार** मुक़र्रर किया जाए।

★ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ के लिये इस्लामी बहनों में मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारियां तक़्सीम की जाएं।

★ शुरका इस्लामी बहनों की ख़ैर ख़्वाही के लिये मिलनसार, नर्म ख़ू, वक़्त की पाबन्द **ख़ैर ख़्वाह** इस्लामी बहन मुक़र्रर की जाए।

★ गुमशुदा अश्या के तह़फ़्फ़ुज़ के लिये अमानतदार, वक़्त की पाबन्द एह़सासे ज़िम्मेदारी रखने वाली इस्लामी बहन को ज़िम्मेदार मुक़र्रर किया जाए।

★ इस्लामी बहनों में माईक, मेगाफ़ोन, सी डी प्लेयर (CD Player), ईको साऊन्ड वग़ैरा के इस्ति'माल की बिल्कुल भी इजाज़त नहीं, इस ज़िम्न में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर्दे के बारे में **सुवाल जवाब** के

सफ़हा 16 पर फ़रमाते हैं : याद रहे दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त और इजतिमाए ज़िक्रो ना'त में इस्लामी बहनों के लाऊडस्पीकर के इस्ति'माल पर पाबन्दी है, लिहाज़ा इस्लामी बहनें ज़ेह्न बना लें कि कुछ भी हो जाए न लाऊडस्पीकर में बयान करना है और न ही इस में ना'त शरीफ़ पढ़नी है। याद रहे ! ग़ैर मर्दों तक आवाज़ पहुंचती हो इस के बा वुजूद बेबाकी के साथ बयान फ़रमाने और ना'तें सुनाने वाली गुनाहगार और सवाब के बजाए अ़ज़ाबे नार की ह़क़दार है (आवाज़ की बे पर्दगी की वज्ह से इस्लामी बहनों को ना'रे लगाने की इजाज़त नहीं इस लिये इजतिमाआ़ में **ग़ीबत के ख़िलाफ़ जंग** का ना'रा भी न लगाया जाए।)

★ इजतिमाआ़ के बा'द नई आने वाली इस्लामी बहनों से आगे बढ़ कर पुर तपाक त़रीक़े से मुलाक़ात व इनफ़िरादी कोशिश कर के अपने पास नाम राबित़ा नम्बर लिख कर बा'द में राबित़ा भी रखा जाए और मौक़आ़ की मुनासबत से तरग़ीब दिलाई जाए।

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़ का जदवल

1	तिलावत	3 मिनट
2	ना'त	6 मिनट
3	दर्स	7 मिनट
4	दुआ़ याद करवाना	7 मिनट
5	बयान मआ़ सुन्नत व ए'लानात	63 मिनट
6	दुरूदे पाक	7 मिनट
7	ज़िक्रो दुआ़	20 मिनट
8	सलातो सलाम	4 मिनट
9	मजलिस के इख़्तिताम की दुआ़	3 मिनट
10	कुल दौरानिया	120 मिनट (2 घन्टे)

सुन्नतों की लूटना जा के मताअ़ हो जहां भी सुन्नतों का इजतिमाअ़[1]

दुआए अ़त्तार

जो पाबन्द है इजतिमाअ़ात का भी मैं देता हूं उस को दुआए मदीना[2]

6 मदनी दौरा

(**हदफ़ मदनी दौरा :** फ़ी ज़ैली हल्क़ा हफ़्तावार 1 मदनी दौरा । **हदफ़ :** शुरका : कम अज़ कम 2 या 3 इस्लामी बहनें)

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ से एक दिन क़ब्ल **मदनी फूल बराए मदनी दौरा** में दिये गए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ 72 मिनट के दौरानिये में जान पहचान वाली गलियों में पर्दे की रिआ़यतों के साथ घर घर जा कर इस्लामी बहनों को नेकी की दा'वत पेश की जाती है । इसे **मदनी दौरा** कहा जाता है ।

करम से नेकी की दा'वत का ख़ूब जज़्बा दे धूम सुन्नते महबूब की मचा या रब[3]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नेकी की दा'वत ह़क़ीक़त में दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्ति'माल होने वाली एक ख़ास इस्ति़लाह़ है, जिस से मुराद नेकी की दा'वत देना और बुराई से रोकना है और इस के मुतअ़ल्लिक़ मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार

1....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 715
2....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 369
3....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 77

ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : (नेकी की दा'वत) हर शख़्स पर उस के मन्सब (Status) के ह़वाले से और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त वाजिब है, इस पर क़ुरआनो सुन्नत नातिक़ है और इजमाए़ उम्मत भी है। (नेकी की दा'वत) हुक्मरानों, उ़लमा व मशाइख़ बल्कि हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है, इसे सिर्फ़ एक त़बक़े तक मह़दूद कर देना सह़ीह़ नहीं और ह़क़ीक़त येह है कि अगर हर शख़्स इस को अपनी ज़िम्मेदारी समझे तो मुआ़शरा नेकियों का गहवारा बन सकता है।[1]

बुराई को बदलने के लिये हर त़बक़े को उस की त़ाक़त के मुत़ाबिक़ ज़िम्मेदारी सोंपी गई, क्यूंकि इस्लाम में किसी भी इन्सान को उस की त़ाक़त से ज़ियादा तक्लीफ़ नहीं दी जाती। अरबाबे इक़्तिदार, असातिज़ा (Teachers), वालिदैन (Parents) वग़ैरा जो अपने मा तह़तों को कन्ट्रोल (Control) कर सकते हैं वोह क़ानून (Law) पर सख़्ती से अ़मल करा के और मुख़ालफ़त की सूरत में सज़ा दे कर बुराई का ख़ातिमा कर सकते हैं। मुबल्लिग़ीने इस्लाम, उ़लमा व मशाइख़, अदीब व सह़ाफ़ी (Journalists) और दीगर ज़राइए़ इब्लाग़ (Means of communication) मसलन रेडियो (Radio) और टी वी वग़ैरा से सभी लोग अपनी तक़रीरों-तह़रीरों बल्कि शुअ़रा (Poets) अपनी नज़्मों (Poems) के ज़रीए़ बुराई का क़ल्अ़ क़म्अ़ करें और नेकी को फ़रोग़ दें, बिलिसानिही (या'नी ज़बान से नेकी की दा'वत पेश करने) के तह़त येह तमाम सूरतें आती हैं और आ़म मुसलमान जिसे इक़्तिदार की कोई सूरत भी ह़ासिल

1....मिरआतुल मनाजीह़, नेक बातों का हुक्म देना, पहली फ़स्ल, 6 / 502

नहीं और न ही वोह तह़रीर व तक़रीर के ज़रीए़ बुराई का ख़ातिमा कर सकता है वोह दिल से इस बुराई को बुरा समझे अगर्चे येह ईमान का कमज़ोर तरीन मर्तबा है क्यूंकि कोशिश कर के ज़बान से रोकना चाहिये लेकिन दिल से बुरा समझेगा तो यक़ीनन ख़ुद बुराई के क़रीब नहीं जाएगा और मुआ़शरे (Society) के बेशुमार अफ़राद ख़ुद ब ख़ुद राहे रास्त पर आ जाएंगे।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बिलाशुबा इल्मे दीन **अल्लाह** पाक के **प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीरास है, जिस के ह़ुसूल के लिये हर एक को कोशिश करनी चाहिये। जैसा कि मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बाज़ार में तशरीफ़ लाए और लोगों से इरशाद फ़रमाया : लोगो ! मैं तुम्हें यहां देख रहा हूं ह़ालांकि वहां **ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **मीरास** तक़्सीम हो रही है। तुम जा कर अपना ह़िस्सा क्यूं वुसूल नहीं करते ? येह सुन कर लोगों ने पूछा कि कहां मीरास तक़्सीम हो रही है ? तो फ़रमाया : मस्जिद में। वोह जल्दी जल्दी मस्जिद की त़रफ़ चल दिये, मगर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه वहीं रुके रहे, वापस आ कर उन्हों ने अ़र्ज़ की : हम ने तो वहां कोई मीरास तक़्सीम होते नहीं देखी। दरयाफ़्त फ़रमाया : फिर तुम ने क्या देखा ? अ़र्ज़ की : हम ने देखा कि कुछ लोग नमाज़ पढ़ रहे हैं तो कुछ तिलावत कर रहे हैं और कुछ इल्मे दीन ह़ासिल कर रहे हैं। इस पर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : येही तो दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इ़ज़्ने परवर दगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीरास है।[2]

1....मिरआतुल मनाजीह़, नेक बातों का ह़ुक्म देना, पहली फ़स्ल, 6 / 503

2.....معجم اوسط، باب الالف، من اسمہ احمد، ۱/۳۹۰، حدیث: ۱۴۲۹

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه : दा'वते इस्लामी का जो बड़े से बड़ा ज़िम्मेदार **मदनी दौरे** में अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा शिर्कत नहीं करता, वोह मेरे नज़दीक सख़्त ग़ैर ज़िम्मेदारी का मुर्तकिब है। (जो मजबूर है वोह मा'ज़ूर है) हफ़्ते में एक दिन मख़्सूस कर के अपने ज़ैली ह़ल्क़े में त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ घर घर जा कर नेकी की दा'वत ज़रूर दें। अगर आप अकेले हैं तो वादिये मिना में तन्हा, ख़ैमा ख़ैमा जा कर नेकी की दा'वत देने वाले मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को याद करें।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

माहाना 2 मदनी काम

7 माहाना तरबियती ह़ल्क़ा

(हदफ़ ह़ल्क़ा : फ़ी डिवीज़न) (हदफ़ शुरका ह़ल्क़ा : फ़ी ज़ैली ह़ल्क़ा 7 इस्लामी बहनें)

ईसवी माह की तीसरी जुमे'रात डिवीज़न सत़ह़ पर 3 घन्टे के दौरानिये में ज़िम्मेदारान और दीगर इस्लामी बहनों को मदनी मर्कज़ के दिये हुए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़, सुन्नतें, दुआ़एं, इस्लामी बहनों के शरई मसाइल वग़ैरा, दर्सो बयान का त़रीक़ए कार और दा'वते इस्लामी की इस्त़िलाह़ात व दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ सिखाए जाते, नीज़ शजरए आ़लिया के औरादो वज़ाइफ़ भी याद करवाए जाते हैं और इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ मदनी काम बढ़ाने का ज़ेह्न देने के साथ साथ मदनी काम समझा कर कोई ज़िम्मेदारी सोंप दी जाती है इसे **माहाना तरबियती ह़ल्क़ा** कहते हैं।

ख़्वाहिशे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़्वाहिश है कि दा'वते इस्लामी को चलाने वाले, इस का मदनी काम करने वाले तरबियत याफ़्ता हों।

★ माहाना तरबियती ह़ल्क़ा ज़िम्मेदारान की मदनी तरबियत का एक अहम और बेहतरीन ज़रीआ़ है।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा इस मदनी मक़्सद को अपना लें कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है :** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ चुनान्चे, इस मदनी मक़्सद के ह़ुसूल का जो आसान तरीन रास्ता है इस के लिये माहाना मदनी काम मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और दूसरी इस्लामी बहनों को इस की तरग़ीब ज़रूरी है।

8 मदनी इन्आ़मात

(हदफ़ : फ़ी ज़ैली ह़ल्क़ा 12 इस्लामी बहनें)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस पुर फ़ितन दौर में नेकियां करने गुनाहों से बचने के त़रीक़ों पर मुश्तमिल शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मजमूआ़ इस्लामी बहनों के लिये 63 मदनी इन्आ़मात ब सूरते सुवालात (Questions) अ़त़ा फ़रमाया है। चुनान्चे, अपनी इस्लाह़ के लिये ख़ुद भी इन मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये और इनफ़िरादी कोशिश करने वाले मदनी इन्आ़म पर अ़मल के ज़रीए़ हर माह मदनी इन्आ़मात के कम अज़ कम 26 रसाइल तक़्सीम कर के वुसूल फ़रमाने की भी कोशिश कीजिये।

मदनी इन्आ़मात के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी इन्आ़मात की अहम्मिय्यत बयान करते हुए फ़रमाते हैं : जब मुझे मा'लूम होता है कि फ़ुलां इस्लामी भाई या इस्लामी बहन का मदनी इन्आ़मात पर अ़मल है तो दिल बाग़ बाग़ बल्कि बागे़ मदीना हो जाता है। या सुनता हूं कि फ़ुलां ने ज़बान और आंखों का या इन में से किसी एक का क़ुफ़्ले मदीना लगाया है तो अ़जीब कैफ़ो सुरूर ह़ासिल होता है।

जो कोई मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ इख़्लास के साथ **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये अ़मल करेगा तो वोह اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** पाक का प्यारा बन जाएगा।

मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना चूंकि दुन्या व आख़िरत के बेशुमार फ़वाइद पर मुश्तमिल है लिहाज़ा शैत़ान इस बात की भरपूर कोशिश करेगा कि आप को इस्तिक़ामत न मिले, मगर आप हिम्मत न हारें और मेहरबानी फ़रमा कर दूसरी इस्लामी बहनों को भी मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल करने की तरग़ीब दिलाती रहें, दो एक बार कहने से अगर कोई अ़मल न करे तो मायूस न हो जाया करें, बल्कि मुसलसल कहती रहें। कानों में बार बार पड़ने वाली बात कभी न कभी दिल में भी उतर ही जाएगी। याद रखें अगर एक भी इस्लामी बहन ने आप के समझाने पर अ़मल शुरूअ़ कर दिया तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के लिये सवाबे जारिया हो जाएगा, आप को सुकूने क़ल्ब ह़ासिल होगा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के अ़लाक़े में क़ुरआनो सुन्नत का मदनी काम न सिर्फ़ चलेगा बल्कि दौड़ेगा, नहीं नहीं इस को तो पर लग जाएंगे और बे साख़्ता मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ उड़ना शुरूअ़ कर देगा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में आप का बेड़ा पार होगा।

तू वली अपना बना ले उस को रब्बे लम यज़ल
मदनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल [1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी बहार

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के ह़ल्फ़िया बयान का ख़ुलासा है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारा घराना **आक़ाए ने'मत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अ़ह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के एक अ़ज़ीमुल मर्तबत ख़लीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की औलाद से है। **सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के वोह ख़लीफ़ए मुकर्रम मेरी वालिदए मोह़तरमा के नानाजान थे और हमारे तमाम अह्ले ख़ाना उन्ही के दस्ते मुबारक पर बैअ़त थे। उन से बैअ़त की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की मह़ब्बत व अ़क़ीदत रगो पै में सरायत किये हुए थी, लेकिन अ़मली ज़िन्दगी में हमारी मिसाल कोरे काग़ज़ की सी थी, बिलख़ुसूस नमाज़ों की पाबन्दी से मह़रूमी थी नीज़ फ़ेशन परस्ती और गाने बाजे सुनने की नुहूसत छाई थी, ग़ुस्सा और चिड़चिड़ा पन हमारी आ़दते सानिया थी। मेरे फूफीज़ाद भाई ने (जो कि दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता थे) इनफ़िरादी कोशिश करते हुए मेरे भाई को भी दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की न सिर्फ़ दा'वत दी बल्कि अपने साथ ले जाना शुरूअ़ कर दिया। भाईजान इजतिमाअ़ से वापसी पर इजतिमाअ़ की रूदाद सुनाते जिस में **सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का ज़िक्रे ख़ैर सुनने को मिलता जिस की वज्ह से मुझे दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से अपनाइय्यत सी महसूस होने लगी।

[1]....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 635

ماخذومراجع

قرآن مجید	♣♣♣♣♣
کتاب	مطبوعہ
کنز الایمان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
مؤطا امام مالک	دار المعرفہ بیروت ۱۴۳۳ھ
مسند احمد	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۹ھ
صحیح البخاری	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۸ھ
سنن الترمذی	دار الکتب العلمیہ بیروت 2008ء
المعجم الکبیر	دار الکتب العلمیہ بیروت 2007ء
المعجم الاوسط	دار الفکر عمان ۱۴۲۰ھ
مرأۃ المناجیح	نعیمی کتب خانہ گجرات
مکاشفۃ القلوب	کوئٹہ پاکستان
الطبقات الکبریٰ لابن سعد	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۰ھ
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۷ھ
البدایۃ والنہایہ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۶ھ
ذوق نعت	شبیر برادرز لاہور
وسائل بخشش مرمّم	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
انفرادی کوشش	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۵ھ

फ़ेहरिस्त

उनवान	सफ़ह	उनवान	सफ़ह
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	"फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा जारी रहेगा" के 24 हुरूफ़ की निस्बत से मजलिसे मदनी मुज़ाकरा के चौबीस मदनी फूल (आ़लमी मजलिसे मुशावरत (दा'वते इस्लामी))	20
नेकी की दा'वत का मदनी सफ़र	1		
इनफ़िरादी कोशिश का नतीजा	4		
दा'वते इस्लामी का मदनी सफ़र	5		
सब से पहला मदनी काम	6	4 मद्रसतुल मदीना बालिग़ात	31
दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब	7	हफ़्तावार 2 मदनी काम	33
ज़ैली ह़ल्क़ा किसे कहते हैं ?	8	5 हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़	34
आठ मदनी कामों की मुख़्तसर वज़ाह़त	9	हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की तरकीब	34
रोज़ाना के 4 मदनी काम	9	हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ का जदवल	35
1 इनफ़िरादी कोशिश	9	दुआ़ए अ़त्तार	36
इनफ़िरादी कोशिश की अहम्मिय्यत	10	6 मदनी दौरा	36
2 घर दर्स	11	माहाना 2 मदनी काम	39
घर दर्स के 14 मदनी फूल	12	7 माहाना तरबियती ह़ल्क़ा	39
घर में दर्स देने के मक़ासिद	15	ख़्वाहिशे अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه	40
मदनी दर्स देने का त़रीक़ा	15	8 मदनी इन्आ़मात	40
मदनी दर्स के आख़िर में इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइये !	16	मदनी इन्आ़मात के मुतअ़ल्लिक़ फ़ामीने अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه	41
3 बयान या मदनी मुज़ाकरा	19	मदनी बहार	42

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

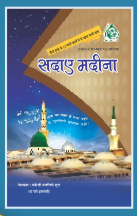

DAWAT-E-ISLAMI

0133181

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ ह़ैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, ह़ैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net